

मूर्ख बगुला और नेवला

जंगल के एक बड़े वट-वृक्ष की खोल में बहुत से बगुले रहते थे । उसी वृक्ष की जड़ में एक साँप भी रहता था । वह बगुलो के छोटे-छोटे बच्चो को खा जाता था ।

एक बगुला साँप द्वारा बार-बार बच्चो के खाये जाने पर बहुत दुःखी और विरक्त सा होकर नदी के किनारे आ बैठा ।

उसकी आँखो में आँसू भरे हुए थे । उसे इस प्रकार दुःखमग्न देखकर एक केकडे ने पानी से निकल कर उसे कहा :-"मामा ! क्या बात है, आज रो क्यों रहे हो ?"

बगुले ने कहा - "भैया ! बात यह है कि मेरे बच्चो को साँप बार-बार खा जाता है । कुछ उपाय नहीं सूझता, किस प्रकार साँप का नाश किया जाय । तुम्ही कोई उपाय बताओ ।" केकडे ने मन में सोचा, 'यह बगुला मेरा जन्मवैरी है, इसे ऐसा उपाय बताऊंगा, जिससे साँप के नाश के साथ-साथ इसका भी नाश हो जाए। यह सोचकर वह बोला -"मामा! एक काम करो, मांस के कुछ टुकडे लेकर नेवले के बिल के सामने डाल दो । इसके बाद बहुत से टुकडे उस बिल से शुरु करके साँप के बिल तक बखेर दो । नेवला उन टुकडो को खाता-खाता साँप के बिल तक आ जायगा और वहाँ साँप को भी देखकर उसे मार डालेगा ।"

बगुले ने ऐसा ही किया । नेवले ने साँप को तो खा लिया किन्तु साँप के बाद उस वृक्ष पर रहने वाले बगुलो को भी खा डाला।

बगुले ने उपाय तो सोचा, किन्तु उसके अन्य दुष्परिणाम नहीं सोचे। अपनी मूर्खता का फल उसे मिल गया ।

सीख: करने से पहले सोचो।

भद्र गगला और नवेल

एंगल क एक मरु वेए-वहु की अपने भगेरु म गगल रेरुत घा उभी वहु की एरु भएक भापी सी ररुत घा। वरु गगल के केए-केए मरेके पोषा एरु घा।

एक गगला भापी मरु गार-गार मरेके पोषा एरु पर मरुत मःपी एरु विररुमा रुकेर नदी क किनार मे मरे।

उमकी सुपि भे सुभे रुर रुए घा उम उम प्रकार मःपभग मरेकर एक ककेरु ने पोनी भनिकल कर उम केरु :- "भाभा ! कृ मरु रु, सुए र केरु रु?"

गगलु ने केरु - "रुयै ! मरु वरु रुकै भरे मरेके भापी गार-गार एरु रुकै उपाष नदी मरुत, किम प्रकार भापी का नाम किषा एरु। उभी करै उपाष मरुत।"

ककेरु ने भन भमेरे, 'वरु गगला भरे एनरुगी रु, उम एभा उपाष मरुत उगा, एमभ भापी क नाम क मोष-भाष उमका सी नाम रु एरु। वरु मरेकर वरु मरुत - "भाभा! एक काम कर, भाभ क केरु एरु रु लै केरु नवेल के मिल क मोभन रुल मः उमक मरे मरुत म एरु रु उम मिल म मेरु कर क मोपी क मिल उक मपरु मः नवेल। उन एरु रु के पोषा उ-पाषा भापी क मिल उक सु एषगा एरु वरु भापी क ही मरेकर उम भेर रुलगा।"

गगलु ने एभा की किषा। नवेल ने भापी क उेपो लिय किनरु भापी क मरे उम वरु पर ररुन वेल गगलु के ही एरु रुल।

गगलु ने उपाष उ भेरे, किनरु उमक मरे मरेके मरु नदी मरे मरेपनी भद्रुत का रुल उम भिल गय।

भीपः करन मे परुल मेरे

मनरुत - विरु कील एरु